

---

# Vrindadevyashtakam

वृन्ददेव्यष्टकम्

## Document Information

---

Text title : vRRindAdevyaShTakam

File name : vRRindAdevyaShTakam.itx

Category : devii, aShTaka, vishhnu, tulasI, devI

Location : doc\_devii

Proofread by : PSA Easwaran psawaswaran at gmail.com

Description/comments : Edited by S. V. Radhakrishna Shastriji

Acknowledge-Permission: Mahaperiaval Trust

Latest update : May 13, 2018

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 25, 2021

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Vrindadevyashtakam

---

### वृन्दादेव्यष्टकम्

---



विश्वनाथयङ्कवतीं ठकुरकृतम् ।  
गाङ्गेययाभ्येयतडिद्धिनिन्दिरोधिःप्रवालस्नपितात्मवृन्दे ।  
अन्धूकअन्धुद्युतिदिव्यवासोवृन्दे नुमस्ते यरणारविन्दम् ॥ १ ॥

भिम्भाधरोदित्वरमन्दलास्थनासाग्रमुक्ताद्युतिदीपितास्थे ।  
विचित्ररत्नाभरणश्रियाढ्ये वृन्दे नुमस्ते यरणारविन्दम् ॥ २ ॥

समस्तवैकुण्ठशिरोमणौ श्रीकृष्णस्य वृन्दावनधन्यधामिन् ।  
दत्ताधिकारे वृषभानुपुत्र्या वृन्दे नुमस्ते यरणारविन्दम् ॥ ३ ॥

त्वदाज्ञया पल्लवपुष्पभृङ्गमृगादिभिर्माधवकेलिकुञ्जाः ।  
मध्वादिभिर्मान्ति विभूष्यमाणाः वृन्दे नुमस्ते यरणारविन्दम् ॥ ४ ॥

त्वदीयदौत्येन निकुञ्जयूनोः अत्युत्सयोः डेलिविलाससिद्धिः ।  
त्वत्सौभागं डेन निरुच्यतां तद्गृन्दे नुमस्ते यरणारविन्दम् ॥ ५ ॥


रासाभिलाषो वसतिश्च वृन्दावने त्वदीशाङ्घ्रिसरोजसेवा ।  
लभ्या य पुंसां कृपया तवैव वृन्दे नुमस्ते यरणारविन्दम् ॥ ६ ॥

त्वं डीर्त्यसे सात्वततन्त्रविद्भिः लीलाभिधाना डिल कृष्णशक्तिः ।  
तवैव मूर्तिस्तुलसी नृलोके वृन्दे नुमस्ते यरणारविन्दम् ॥ ७ ॥


भक्त्या विडीना अपराधलेशैः क्षिमाश्च कामादितरङ्गमध्ये ।  
कृपामयि त्वां शरणं प्रपन्नाः वृन्दे नुमस्ते यरणारविन्दम् ॥ ८ ॥

वृन्दाष्टकं यः शृणुयात्पठेद्यथ वृन्दावनाधीशपदाब्जभृङ्गः ।  
स प्राप्य वृन्दावननित्यवासं तत्प्रेमसेवां लभते कृतार्थः ॥ ९ ॥

एति विश्वनाथयङ्कवतीं ठकुरकृतं वृन्दादेव्यष्टकं सम्पूर्णम् ।

——  
*Vrindadevyashtakam*

pdf was typeset on November 25, 2021

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

